दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 61* ❑ *अंक-23* ❑ *दिल्ली* ❑ *सितम्बर (प्रथम) 2023* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

चांद की दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बना भारत

• डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

भारत ने 23 अगस्त 2023 की शाम चंद्रमा पर कदम रख अंतरिक्ष क्षेत्र नई कामयाबी का शंखनाद किया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल 'साफ्ट लैंडिंग' के बाद भारत वहां पहुंच गया, जहां अभी तक पहले कोई देश नहीं पहुंचा है। भारत का चंद्र मिशन 'चंद्रयान–3' 23 अगस्त को शाम 6.04 बजे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरा, जिससे देश चांद के इस क्षेत्र में उतरने वाला दुनिया का पहला तथा चंद्रमा की सतह पर सफल 'साफ्ट लैंडिंग' करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है।

इससे पूर्व सोवियत संघ (रूस), अमेरिका और चीन ही चन्द्रमा की सतह पर पहुंच पाये थे।

चंद्रयान–3 के उतरने के दो घंटे और 26 मिनट बाद लैंडर विक्रम के भीतर से रोवर प्रज्ञान भी बाहर आ गया। रोवर छह पहियों वाला रोबोट है। चांद की सतह पर चलेगा। इसके पहियों में अशोक स्तंभी की छाप है। जैसे–जैसे रोवर चांद की सतह पर चलेगा, वैसे–वैसे अशोक स्तंभ की छाप पड़ती चली जाएगी।

वैज्ञानिकों के अनुसार, चंद्रयान–3 को चंद्रमा पर उतारने के इस अभियान के अंतिम चरण में सारी प्रक्रियाएं पूर्व निर्धारित योजनाओं के अनुरूप ठीक से चलीं। चंद्रमा की सतह पर यान के उतरते ही इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा, 'हमने चंद्रमा पर 'साफ्ट लैंडिंग' में सफलता हासिल कर ली है। भारत चांद पर है।' यह एक ऐसी सफलता है जिसे न केवल इसरो के शीर्ष वैज्ञानिक, बल्कि भारत का हर आम और खास आदमी टीवी की स्क्रीन पर टकटकी बांधे देख रहा था। देश भर में विद्यालयों, महाविद्यालयों और कई जगहों पर इस ऐतिहासिक घटना का सीधे प्रसारण में शामिल हुये लोग इतिहास रचे जाने की घटना के प्रत्यक्षदर्शी बने। भारत की यह सफलता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हाल में रूस का 'लूना 25' चांद पर उतरने की कोशिश करते समय दुर्घटना का शिकार हो गया था।

बीत गत 14 जुलाई 2023 को चंद्र यात्रा पर रवाना हुए चंद्रयान–3 की सफलता और इस प्रौद्योगिकी में भारत के महारत हासिल करने से पूरे देश में जश्न का माहौल है। भारत से पहले चांद पर सोवियत संघ, अमेरिका और चीन ही सफल 'साफ्ट लैंडिंग' कर पाए हैं, लेकिन ये देश भी चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर 'साफ्ट लैंडिंग' नहीं कर पाए। अब अकेले भारत के नाम इस उपलब्धि को हासिल करने का कीर्तिमान दर्ज हुआ है।

चार साल में भारत के दूसरे प्रयास में चंद्रमा पर अनगिनत सपनों को साकार करते हुए चंद्रयान–3 के चार पैरों वाले लैंडर 'विक्रम' ने अपने पेट में रखे 26 किलोग्राम के रोवर 'प्रज्ञान' के साथ योजना के अनुसार चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में सफलतापूर्वक 'साफ्ट लैंडिंग' की। 23 अगस्त 2023 को शाम 5.44 बजे लैंडर माड्यूल को चंद सतह की ओर नीचे लाने की शुरू की गई प्रक्रिया के दोरान इसरो वैज्ञानिकों ने इस कवायद को दहशत के 20 मिनट के रूप में वर्णित किया। लैंडिंग के तुरंत बाद, इसरो ने कहा कि लैंडर और अंतरिक्ष एजेंसी के बंगलुरू स्थित मिशन संचालन परिसर के बीच संचार लिंक स्थापित हो गया। अंतरिक्ष एजेंसी ने चंद्रमा की सतह पर उतरने के दौरान 'हारिजांटल वेलोसिटी कैमरा' द्वारा ली गई लैंडर की तस्वीरें भी जारी की। इसरो के अधिकारियों के मुताबिक, लैंडिंग के लिए 30 किलोमीटर की ऊंचाई पर लैंडर ने पावर ब्रेकिंग फेज में कदम रखा और गति को धीरे–धीरे कम करके, चंद्रमा की सतह तक पहुंचने के लिए अपने चार ब्रस्टर इंजन की 'रेट्रो' फायरिंग' करके उनका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

उन्होंने बताया कि ऐसा वह

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

राष्ट्र की मूल शक्ति–बुद्ध के लोग

• डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

14 अप्रैल, 1998 को भारतरत्न डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के जन्म दिवस पर नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में महात्मा ज्योतिबा फुले सैनी मैमोरियल ट्रस्ट की ओर से अखिल भारतीय सम्मेलन हआ, जिसमें पूरे देश से सैनी, शाक्य, मौर्य, कुशवाहा समाज के लोगों ने भाग लिया। सम्मेलन में सभी वक्ताओं ने कहा कि हम महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले और बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर को मानने वाले हैं और इनके अनुयायी हैं। हमें इनके मार्ग पर चलकर ब्राह्मणवाद को खत्म कर देश की सत्ता और सम्पदा पर कब्जा करना होगा।

24 सितम्बर, 1998 को पूना पैक्ट दिवस पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी का 14वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था, जिसमें देश–विदेश के 10 हजार से ऊपर दलित साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, समाजसेवकों ने भाग लिया था। सम्मेलन में सभी बुद्धिजीवी दलित प्रतिनिधियों का कहना था कि 'पूना पैक्ट' के नाम पर दलितों के साथ धोखा हुआ है। 'कम्युनल एवार्ड' से उन्हें जो अधिकार मिलने वाले थे, उनकी कुछ क्षति पूर्ति दलितों को मिले 'आरक्षण' से हो सकती थी, पर अब तक ब्राह्मणवादियों ने 'आरक्षण नीति' पर ईमानदारी से अमल नहीं किया है। वे उल्टे धीरे–धीरे 'आरक्षण' को खत्म करने और दलितों को सदैव के लिए गुलाम बनाये रखने की साजिश कर रहे हैं। ऐसे में हमें महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले और बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अपने अधिकार पाने और अपनी स्थिति सुधारने का जो मार्ग दिखाया था, उसे अपनाना चाहिए।

देश में दलित लोग 30 फीसदी हैं जो किसी भी तरह 'हिन्दू' नहीं हैं, क्योंकि सवर्ण हिन्दू की तरह उन्हें समाज में बराबरी के अधिकार नहीं हैं। दलित अछूत हैं। उनके न तो नाई बाल काटता है, न ही उनके ब्याह–शादी में शामिल होता है, इसी तरह ब्राह्मण न उनका कोई संस्कार करता है और न ही उनके किसी काम में शरीक होता है, क्षत्री या वैश्य तो उन्हें अपने दास व गुलाम से ज्यादा कुछ भी मानने के लिए तैयार नहीं, वे न अच्छा खा सकते हैं, न अच्छा पहन सकते हैं और न ही अच्छी तरह घर बनाकर रह सकते हैं। अछूत दलितों के रीति–रिवाज भी सवर्णों से अलग हैं, खान–पान पहनावा भी। फिर उनकी बस्तियां ही उनका समाज है जहां उनमें से ही उनके नाई, पंच, चौधरी और संस्कार कराने वाला पंडित होता है। इस तरह हिंदू समाज से उन्हें कुछ लेना देना नहीं। हिंदुओं ने तो अपनी संख्या बढ़ाने के लिए उन्हें अपने साथ झूठमुठ जोड़ रखा है और इस तरह 15 फीसदी तथाकथित हिन्दुओं ने देश की 96 फीसदी सत्ता और सम्पदा पर कब्जा किया हुआ है। दलित व अछूतों को तो वे किसी सत्ता व सम्पदा के अधिकारी ही नहीं समझते।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

मो. 9810278936, 9891989175

सम्पादकीय पृष्ठ 1 का शेष.....राष्ट्र की मूल शक्ति–बुद्ध के लोग

देश में शोषित व पिछड़े लोग 55 फीसदी हैं जो कहने को तो हिन्दू हैं पर सवर्ण हिन्दुओं की तरह उन्हें भी पूरे अधिकार नहीं हैं। दलितों की तरह वे भी देश की कृषि–सम्पदा की बढ़ोतरी और सवर्णों की तिमारदारी और जी–हजूरी करने के लिए हैं। दलित तो यज्ञोपवीत संस्कार से विहीन है ही, तभी तो गुरुकुल व विद्यालयों में उनके शिक्षा ग्रहण करने पर पाबंदी है। शोषित–पिछड़े भी 'यज्ञोपवीत संस्कार' से विहीन हैं। इसलिए गुरुकुल और शिक्षण संस्थानों पर उनके लिए भी पाबन्दी है क्योंकि द्विजों का ही 'यज्ञोपवीत संस्कार' किया जाता है, वे ही शिक्षा ग्रहण करने और वेदादि का अध्ययन करने के अधिकारी हैं।

इस तरह दलित अछूतों और शोषित पिछड़ों की स्थिति द्विजों यानि सवर्ण हिन्दुओं की दृष्टि में एक समान है। सिर्फ इन दोनों में इतना अन्तर कर रखा है कि दलित अछूत सवर्ण की घर की देहरी (चौखट) तक जा सकता है और शोषित पिछड़े गुलामी व तिमारदारी के लिए उनके घर के अन्दर तक जा सकते हैं। उनकी सेवा के लिए दोनों ही गुलाम हैं और उनकी महिलायें–उनकी नजर में बन्धिनी, बांदी, कामतृप्ति की गुड़िया और रखैल, जिन्हें जब चाहा वे इस्तेमाल कर सकते हैं। उनकी नजर में दलित, अछूत व शोषित पिछड़ों की इज्जत, मान, मर्यादा कुछ भी नहीं है क्योंकि अधिकांश सवर्ण द्विजों की मान्यता है कि 'वीर भोग्य बसुन्धरा' यानि वे ही वीर हैं, समर्थ हैं और समाज में सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम हैं, इसलिए धरती की सभी वस्तुओं का उपभोग करने का अधिकार उन्हीं को है।

इसलिए द्विजों के अतिरिक्त शेष लोग (दलित व पिछड़े) उनकी सम्पत्ति पर उपभोग करने का उनका पूरा अधिकार है। ऐसी स्थिति में दलित अछूत व शोषित–पिछड़ों की हालत एक जैसी है। ये दोनों संस्कार विहीन, अधिकार विहीन, सम्पत्ति विहीन, सत्ता विहीन है। हिन्दुओं के वर्ण व्यवस्था और ब्राह्मणवाद से ऊबकर दोनों ही बुद्ध की शरण में गये, बौद्ध बने, बुद्ध धर्म संघ में शामिल हुए। बौद्ध धर्म के ह्रास व विनाश के बाद दोनों को ही फिर से अत्याचार और अन्याय का शिकार होना पड़ा और आज भी आजादी के 75 साल बाद इन दोनों वर्गों की स्थिति शोचनीय है, भले ही दलित अपने को महादेव की सन्तान बताने का ढोंग रचकर अपना 'अहम' ऊंचा रखने का नाटक करता हो या फिर हम कुशवाहा, लव कुश की सन्तान या शाक्यमुनि महात्मा बुद्ध के अनुयायी मानकर ऊंचा होने का दंभ भरते हों, पर दोनों की स्थिति आज भी अधिकार विहीन हैं। इस तरह दलित अछूत तथा शोषित पिछड़े वर्ग दोनों निम्न आधार पर एक समान हैं–

1. ये दोनों वर्ग हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था में चतुर्थ वर्ण में हैं।
2. ये दोनों वर्ग अद्विज हैं, यज्ञोपवीत संस्कार विहीन हैं। इसलिए विद्या, सत्ता व सम्पदा विहीन हैं।
3. इन दोनों को हिन्दू धर्म में सवर्णों (द्विजों) के समान बराबर के अधिकार नहीं हैं।
4. ये दोनों वर्ग ही असमानता, अन्याय, अत्याचार, अनादर के शिकार हैं।
5. ये दोनों वर्ग महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के अनुयायी हैं।
6. ये दोनों वर्ग प्राचीन बौद्ध हैं और बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर धर्म संघ में शामिल थे।
7. इन दोनों वर्गों के रीति, रिवाज और संरकार एक समान हैं और एक दूसरे से मिलते–जुलते हैं।
8. ये दोनों वर्ग सवर्णों की अपेक्षा एक दूसरे के काफी नजदीक हैं।
9. ये दोनों ही इस देश के मूल निवासी, आदिवासी हैं।

इस तरह उपरोक्त बातों ये यह साबित है कि इस देश के दलित अछूत व शोषित पिछड़े एक ही वर्ग के लोग हैं और ब्राह्मणवाद ने उनके बीच ऊंच–नीच की भावना और श्रेणी खड़ी की हुई है। इन दोनों वर्गों का खून एक है, धर्म एक है, आस्था एक है, धार्मिक गुरु एक है, सामाजिक नेता एक है, मार्गदर्शक एक है। इसीलिए देश की राजनैतिक व सामाजिक व्यवस्था को पूरी तरह बदलने के लिए उन्हें एकजुट हो जाना चाहिए तभी वे छिने हुए अधिकार–सत्ता व सम्पदा पर पुनः काबिज हो सकेंगे। •

सावित्री बाई फुले वंदना

जन जन की जननी
राष्ट्र माता सावित्री बाई फुले
ज्वालामुखी ज्वाला की ज्योति पुंज
जय भीम स्वरों से
कंठ कंठ भर दो
शिक्षा से मां जननी
रोम–रोम भर दो
पसरा गहन अंधकार
धरा पर आलोक फैलायी
ज्ञान विज्ञान पथ दिखलाया
कलम की प्रचंड शक्ति
तलवार धार सी
नव पल्लवों में
क्रान्ति का स्वर भर दो
काट जंजीर विषमता
समता, स्वतंत्रता, न्याय, बन्धुत्व
रसधार बहा दो
संगठन संघर्ष पथ दिखा
युग–युग के बंधन से मुक्त करो
तन मन में प्रकाश भर दो
भारत की पहली शिक्षिका
विद्या की देवी
बहुजन की जननी
जय भीम विचारों से
रोम–रोम भर दो
पाखण्ड मिटा दो
श्रम शक्ति भर दो
निज प्रकाश से
धरती का आंचल
भर दो, भर दो, भर दो।

– यदुनाथ सेवटा

पृष्ठ 1 का शेष.... चांद की दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बना भारत

सुनिश्चित करने के लिए किया गया कि चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव के कारण लैंडर टूट न जाए। अधिकारियों के अनुसार, 6.8 किलोमीटर की ऊंचाई पर पहुंचने पर केवल दो इंजन का इस्तेमाल हुआ और बाकी दो इंजन बंद कर दिए गए, जिसका उद्देश्य सतह के और करीब आने के दौरान लैंडर को रिवर्स थ्रस्ट (सामान्य दिशा की विपरीत दिशा में धक्का देना, ताकि लैंडिंग के बाद लैंडर की गति को धीमा किया जा सके) देना था। अधिकारियों ने बताया कि 150 से 100 मीटर की ऊंचाई पर पहुंचने पर लैंडर ने अपने सेंसर और कैमरों का इस्तेमाल कर सतह की जांच की, ताकि यह पता चल सके कि कहीं कोई बाधा तो नहीं है और फिर इसने साफ्ट लैंडिंग करने के लिए नीचे उतरना शुरू कर दिया। इसरो के अनुसार, चंद्रमा की सतह और आसपास के वातावरण का अध्ययन करने के लिए लैंडर और रोवर के पास एक चंद्र दिवस (पृथ्वी के 14 दिन के बराबर) का समय होगा। हालांकि, वैज्ञानिकों ने दोनों के एक और चंद्र दिवस सक्रिय रहने की संभावनाओं से इनकार नहीं किया है। चंद्रयान–3, चंद्रयान–2 का अनुवर्ती मिशन है और इस मिशन को भी चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित 'साफ्ट लैंडिंग', चंद्रमा पर रोवर की चहलकदमी और वैज्ञानिक प्रयोगों को अंजाम देने के उद्देश्य से भेजा गयां चंद्रयान–2 सात सितंबर, 2019 को 'साफ्ट लैंडिंग' का प्रयास करते समय लैंडर की ब्रेकिंग प्रणाली में विसंगति के कारण विफल हो गया था। पहले चंद्र मिशन को 2008 में अंजाम दिया गया था।

चंद्रयान–3 मिशन पर 600 करोड़ रुपए की लागत आई और 14 जुलाई 2023 को इसे प्रक्षेपण यान 'लांच व्हीकल मार्क–3' राकेट के जरिए प्रक्षेपित किया गया था। लैंडर और छह पहियों वाले रोवर (कुल वजन 1,752 किलोग्राम) की एक चंद्र दिवस की अवधि (धरती के लगभग 14 दिन के बराबर) तक काम करने के लिए डिजाइन किया गया है। लैंडर में सुरक्षित रूप से चंद्र सतह पर उतरने के लिए कई सेंसर थे, जिसमें एक्सेलेरोमीटर, अल्टीमीटर, डापलर वेलोमीटर, इनक्लिनोमीटर, टचडाउन सेंसर और खतरे से बचने एवं स्थिति संबंधी जानकारी के लिए कैमरे लगे थे।

यह सफलता पूरी मानवता की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 23 अगस्त को चंद्रयान–3 के चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक उतरने के बाद देशवासियों, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और वैज्ञानिक समुदाय को बधाई दी और कहा कि 'भारत अब चंद्रमा पर है' तथा यह सफलता पूरी मानवता की है।

मिशन के सफल होने के तुरंत बाद प्रधानमंत्री ने इसरो के प्रमुख एस सोमनाथ को फोन किया और उन्हें व वैज्ञानिकों की पूरी टीम को बधाई दी। मोदी ने कहा, 'जबहम अपनी आंखों के सामने ऐसा इतिहास बनते हुए देखते हैं तो जीवन धन्य हो जाता है। ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं राष्ट्रीय जीवन की चिरंजीव चेतना बन जाती है।'

मोदी ने कहा, 'यह पल अविस्मरणीय है, यह क्षण अभूतपूर्व है, यह क्षण विकसित भारत के शंखनाद का है। यह क्षण नए भारत के जयघोष का है। यह क्षण मुश्किलों के महासागर को पार करने का है। यह क्षण जीत के चंद्र पथ पर चलने का है। यह क्षण 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। यह क्षण भारत में नई ऊर्जा, नए विश्वास, नई चेतना का है। ये क्षण भारत के उदयीमान भाग्य के आह्वान का है।'

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत का सफल चंद्र मिशन केवल भारत का नही है बल्कि पूरी मानव जाति का है। उन्होंने कहा, 'यह एक ऐसा वर्ष है, जिसमें दुनिया भारत की जी–20 अध्यक्षता देख रही है। एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य का हमारा दृष्टिकोण दुनिया भर में गूंज रहा है। यह मानव–केंद्रित दृष्टिकोण जो हम प्रस्तुत करते हैं, उसका सार्वभौमिक रूप से स्वागत किया गया है। हमारा चंद्रमा मिशन भी उसी मानव केंद्रित दृष्टिकोण पर आधारित है। इसलिए, यह सफलता पूरी मानवता की है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अमृत काल की प्रथम प्रभा में सफलता की वह अमृत वर्षा हुई है।

देशवासियों के उमंग और उल्लास से खुद को जोड़ते हुए मोदी ने कहा कि वह टीम चंद्रयान को, इसरों को और देश के सभी वैज्ञानिकों को जी जान से बहुत–बहुत बधाई देता हूं, जिन्होंने इस पल के लिए वर्षों तक इतना परिश्रम किया।

उन्होंने कहा, 'हमारे वैज्ञानिकों के परिश्रम और प्रतिभा से भारत चंद्रमा के उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा है, जहां आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच सका हैं अब आज के बाद से चांद से जुड़े मिथक बदल जाएंगे। कथानक भी बदल जाएंगे। और नई पीढ़ी के लिए कहावतें भी बदल जायेंगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चंद्रयान–3 की सफलता पर 26 अगस्त को बंगलुरु में इसरो के वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि नई पीढ़ी को भारत के शास्त्रों में वर्णित खगोलीय सूत्रों को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करने ओर उनका नए सिरे से अध्ययन करने के लिए आगे आना चाहिए।

भावुक हुए मोदी ने कहा–'मैं आपसे मिलने ओर आपके परिश्रम, समर्पण, साहस, भक्ति और जुनून को सलाम करने के लिए बेसब्र और उत्सुक था। भारत चांद पर है। हमारा राष्ट्रीय गौरव चांद पर

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पृष्ठ 1 का शेष.... चांद की दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बना भारत

है। चंद्रयान–3 की सफलता में महिला वैज्ञानिकों की भूमिका की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, देश की नारी शक्ति ने बड़ी भूमिका निभाई है।'

प्रधानमंत्री ने '23 अगस्त' का दिन 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के रूप में मनाने की भी घोषणा की, जिसका उद्देश्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की भावना का जश्न मनाना ओर लोगों को अनंत काल तक प्रेरित करना है।

इसरो के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने मोदी को चंद्रयान–3 मिशन और इसकी प्रगति के बारे में जानकारी दी। उस स्थल का नामकरण करने पर जहां चंद्रयान–2 ने अपनी छाप छोड़ी थी, मोदी ने कहा, वह भारत के हर प्रयास के लिए एक प्रेरणा के रूप में काम करेगा और हमें याद दिलाएगा कि विफलता कोई अंत नहीं है। उन्होंने कहा, जहां दृढ़ इच्छाशक्ति हो वहां सफलता एक गारंटी है।

चांद पर 'शिवशक्ति'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 अगस्त को घोषणा की कि चंद्रयान–3 का 'लैंडर' चंद्रमा की सतह पर जिस स्थान पर उतरा है, उसका नाम 'शिवशक्ति पाइंट' होगा, जो कल्याण एवं ताकत का मिलन है। मोदी ने कहा कि जिस स्थान पर 'लैंडर' विक्रम उतरा था, उसका नाम 'शिवशक्ति पाइंट' रखा जाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने चंद्रयान–3 मिशन की सफलता को भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के इतिहास का 'असाधारण क्षण' करार दिया। उन्होंने कहा कि चंद्रमा की सतह पर जिस स्थान पर चंद्रयान–2 ने 2019 में अपने पदचिन्ह छोड़े थे, उसे 'तिरंगा पाइंट' के नाम से जाना जाएगा। उन्होंने कहा कि यह 'तिरंगा पाइंट' भारत के हर प्रयास की प्रेरणा बनेगा और सीख देगा कि कोई भी विफलता आखिरी नहीं होती।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सतह पर उतरने की जगह का नामकरण करने की वैज्ञानिक परंपरा रही है। शिव में मानवता के कल्याण का संकल्प समाहित है और 'शक्ति' से हमें उन संकल्पों को पूरा करने का सामर्थ्य मिलता है। चंद्रमा का 'शिवशक्ति पाइंट' हिमालय के कन्याकुमारी से जुड़े होने का बोध कराता है। •

डा. अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय पुरस्कारों की घोषणा

डा. अम्बेडकर इन्टरनेशनल अवार्ड–नेपाल के दलित नेता श्री रनेन्द्र बराली को

39वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन-2023 में 10 दिसम्बर, 2023 को दिल्ली में सम्मानित किये जायेंगे

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने भारतरत्न बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर की 132वीं जयन्ती के शुभावसर पर 'डा. अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय अवार्ड–2023' से सम्मानित किये जाने वाले नामों की घोषणा की है। भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने बताया कि इस वर्ष का डा. अम्बेडकर इन्टरनेशनल अवार्ड नेपाल के दलित नेता श्री रनेन्द्र बराली, मेम्बर, प्रतिनिधि सभा, नेपाल को दिया जायेगा। श्री बराली पिछले 50 सालों से नेपाल के दलित एवं शोषित व्यक्तियों के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं।

अकादमी की ओर से 'डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय अवार्ड–2023' के लिए चयनित किये गये 10 नामों की घोषणा करते हुए अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने बताया कि इन महानुभावों को अकादमी के दिल्ली में होने वाले 39वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन–2023 में 10 दिसम्बर, 2023 को सम्मानित किया जायेगा।

डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय अवार्ड-2023

दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए

1. **डा. राम गोपाल भारतीय**
   वरिष्ठ दलित साहित्यकार
   मेरठ (उत्तर प्रदेश)
2. **श्री यदुनाथ सेऊटा**
   ग्राम/डाक. सेऊटा
   जिला–आजमगढ़
   (उ. प्र.) 276128
3. **श्री धर्मेन्द्र कुमार 'रविकुल'**
   दलित साहित्यकार
   अणु शक्ति, भाभा नगर,
   कोटा (राजस्थान)

दलित पत्रकारिता की अभिवृद्धि के लिए

4. **श्री जरनैल सिंह रंगा**
   सम्पादक–गजब हरियाणा
   कुरूक्षेत्र (हरियाणा)

दलित समाज की अस्मिता व गौरव की अभिवृद्धि के लिए

5. **श्रीमती प्रिया सिंह मेघवाल**
   अन्तर्राष्ट्रीय बाडी बिल्डिंग प्रतियोगिता
   थाईलैंड में गोल्ड मेडल विजेता
   प्रथम महिला बाडी बिल्डर,
   नागौर (राजस्थान)
6. **चमार रेजिमेंट का महान दलित योद्धा श्री चुन्नी लाल**
   द्वितीय विश्व युद्ध में 'कोहिमा बेटल अवार्ड' से सम्मानित
   भोजावास, महेन्द्रगढ़
   (हरियाणा)

दलितोत्थान – समाज सेवा के लिए

7. **श्रीमती अमीनी पीटर**
   दलित समाज सेविका
   कोट्टायम (केरल प्रदेश)
8. **श्री धम्म ज्योति गजभिये**
   एम.डी., लीडकाम,
   चर्मोद्योग महामण्डल
   महाराष्ट्र
9. **श्री चन्द्रसेन, समाज सेवक**
   पूर्व डिप्टी डायरेक्टर, पर्यटन
   उत्तराखंड
10. **श्री खादिम कान्ता सिंह**
    समाज सेवक
    प्रदेशाध्यक्ष – बी.डी.एस.ए. मिजोरम

बुद्ध, सिद्ध, नाथ और संत

• एस. राव संजीव नाथ

नाथ, सन्त, बुद्ध, सिद्ध सम्प्रदाय मूल भारतीय नागवंशियों का ही अंग रहा है, जिन पर विदेशी हमलावर वैदिक आर्यों ने अधिपत्य जमाते हुए ब्राह्मणवादी हिन्दू धर्म रंग चढ़ाने का षड्यंत्र रचा। इन षड्यंत्रकारियों के आक्रमणों के कारण नष्ट–भ्रष्ट हुई जीर्ण–क्षीण अवस्था को प्राप्त मिटती नागवंशियों की मूल भारतीय आदि 'श्रमण संस्कृति' का पुनरुद्धार सिद्धार्थ गौतम ने आज से लगभग पौने तीन हजार वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म के रूप किया था। किन्तु ब्राह्मण–संस्कृति पोषक व जात्याभिमानी वैदिकों ने घात लगाकर छल–छद्म से न केवल समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता आधारित मूल भारतीय श्रमण–संस्कृति पोषक बौद्ध धर्म को मिटाने का षड्यंत्र रखा बल्कि अपनी समझ से मिटा ही डाला।

लेकिन जब हम बुद्ध से सिद्ध, सिद्ध से नाथ, नाथ से सन्त सम्प्रदाय के रूप बदलते बौद्धों के काल–चक्र पर दृष्टि डालते हैं तब यहां से मूल भारतीयों की श्रवण–संस्कृति के पुनरुद्धारित रूप बौद्ध धर्म के पूर्णतः मिट जाने की बात न केवल सत्य से दूर भ्रामक बल्कि गलत भी साबित हो जाती है। यह सत्य है कि एक लम्बे उतार–चढ़ाव के दौर से गुजरते हुए समय के मारे यहां के बंटते–बिखरते बौद्धजन अपने नागवंशी पूर्वजों की श्रमण–संस्कृति आधारित बौद्ध धर्म को उसके शुद्ध बुद्धिवादी रूप में संजोये रखने में असमर्थ रहे किन्तु बौद्ध धर्म बौद्ध विरोधी शक्तियों से बचते–बचते हुए बुद्ध, नाथ, सन्त आदि परम्पराओं के रूप में मूल भारतीय श्रमण–संस्कृति की समता, स्वतंत्रता, न्याय, बन्धुता की बुद्धिवादी धारा यहां बहती ही रही है, जिसका असर अनुसूचित जाति, जनजाति तथा पिछड़ी जाति आदि के रूप में बंटे–बिखरे बहुसंख्यक मूल भारतीय नागवंशी समाज में विशेष रूप से देखने को मिलता रहता है।

बौद्ध धर्म के समता–बन्धुता के मूल सिद्धान्त को संजोये रखने वाले 'नाथ' सम्प्रदाय के सम्बन्ध में विद्वान लेखक आर.पी. गौड़ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दुत्व' में स्पष्ट लिखा है कि विक्रम की सातवीं–नवीं शताब्दी के भीतर बौद्ध और हिन्दू (दोनों) तांत्रिक वाम मार्ग की उपासना में एक हो रहे थे। बिहार में विशेषतः यह सिद्धों का काल था और नालन्दा और विक्रमपुर के बौद्ध विश्वविद्यालय तो इनके केन्द्र थे। इन सिद्धों में सभी वर्ण के लोग शामिल थे। अतः ब्राह्मणों का ऊंचा आदर्श उनमें काम नहीं करता था।''

इसी पुस्तक में उन्होंने अन्यत्र लिखा है, ''तांत्रिक और सिद्धों के चमत्कार प्रसिद्ध हो गये थे... (जब) तांत्रिक सिद्धियों का दुरुपयोग होने लगा। शाक्त मद्यमांसादि के व्यवहार के लिए और सिद्ध तांत्रिक आदि स्त्री सम्बन्धी आचारों के कारण घृणा दृष्टि से देखे जाने लगे। इन कदाचारों के साथ ही इन सिद्ध और साधकों की यौगिक क्रियायें भी डूब रही थी... उस समय 'नाथ' सम्प्रदाय भी सृष्टि (उत्पत्ति) हुई।''

मूल भारतीय नागवंशियों के वंश पर्व नागपंचमी के अवसर पर इसके सम्बन्ध में संक्षेप में यहां इतना ही कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही मनाया जाने वाला यह एक ऐसा पर्व रहा है, जो मूल निवासी नागवंशियों के प्राचीन संगठन एवं गौरवशाली इतिहास की उजागर करता है। इस पर्व के मानने के पीछे एक लम्बी ऐतिहासिक कहानी यह रही है कि यह पर्व हजारों वर्ण एवं जातियों में बंटे–बिखरे इतिहास प्रसिद्ध भारत के मूल निवासी बहुसंख्यक नागवंशियों का वंश उत्सव के रूप में मनाये जाने वाला एक प्राचीन त्यौहार है। तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है, जब हम देखते हैं कि नागों की पूजा के चिन्ह हमें मोहनजोदड़ो–हड़प्पा आदि की खुदाई से प्राप्त हुए हैं जबकि आर्यों के वेदों में हमें नाग पूजा का कोई भी उल्लेख नहीं मिलता है।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि वर्ण–जाति जैसी शोषक प्रथाओं के आविर्भाव से पूर्व दुनिया भर में मानव समूहों के सम्बोधन हेतु 'टोटम–सिस्टम' का चलन हुआ, जो प्रत्येक मानव समूह के स्वभाव, गुण रंग, रूप आदि का परिचायक होता था। उस युग में आज की तरह ब्राह्मणवादी भेद विषमतापोषक वर्ण–जाति नहीं बल्कि अलग–अलग मानव समूहों को वृक्ष, पशु, पक्षी आदि जैसे चिन्हों से जोड़कर चिन्हित किया अथवा पहचाना जाता था।

बढ़ते समय के साथ–साथ वह जत्था भी बढ़ता ही गया। वह दिन भी दूर न रहा जबकि भारत में आर्यों के आगमन के पूर्व इस विशाल जन समूह ने सम्पूर्ण भारत में फैलकर चप्पे–चप्पे पर अपना आधिपत्य कायम किया। कहना न होगा कि समय के साथ अपने वंश के सम्बोधन सूचक नागों के प्रति उनकी स्वाभाविक रुचि काफी बढ़ी और जैसा कि बरसात का यह मौसम सर्पों के लिए आपातकाल का रहा करता है क्योंकि बरसात के मौसम में सर्पों के बिलों में पानी पहुंचता है और बिलों में एकाएक पानी पहुंचने से वे बिलों से बाहर निकल–निकलकर अपनी जान बचाने हेतु इधर–उधर भागते छिपते हैं। ऐसे समय बहुत से लोग इन्हें मारते हैं। अस्तु, अपने वंश चिन्ह, नाग के रक्षार्थ भारत के चप्पे–चप्पे पर बसे हमारे महान नागवंशीपूर्वजों

हिमायती
7 / सितम्बर (प्रथम) 2023 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 31 अगस्त, 2023

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

ने प्रत्येक वर्ष बरसात के सावन माह की पंचमी को 'नागपंचमी' अथवा अन्य क्षेत्रीय नामों से वंश उत्सव मनाकर आने वाली पीढ़ी का अपने वंश चिन्ह 'नाग' की रक्षा की प्रेरणा दी। इस प्रकार प्राचीन काल से सम्पूर्ण भारत में देशवासी विशेषकर नागवंशी जन इस त्यौहार को अपने–अपने ढंग से मनाते हैं। इसके प्राचीनकाल की पुष्टि इस तथ्य से भी हो जाती है कि भारतीय वर्ष का आरंभ प्रत्येक वर्ष 'नागपंचमी' से ही होता है। •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक : हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के सूत्रधार

• मेहर सिंह पूषण

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना में हमारी भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हम भी अपने आपको दलित साहित्य अकादमी के संस्थापकों में से एक मानते हैं। मैं उत्तर प्रदेश का भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अध्यक्ष और भारतीय दलित साहित्य अकादमी का राष्ट्रीय महामन्त्री रहा हूं। अब मेरा लगाव उतना नहीं रहा है, परन्तु मैं अकादमी के विषय में विद्वान पाठकों और दलित प्रतिभाओं को यह बता देना चाहता हूं कि इस दलित साहित्य अकादमी ने दलित प्रतिभाओं को जागृत कर उन्हें उचित सम्मान देने का महत्वपूर्ण कार्यक्रम चलाया है। इससे दलित प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिला है।

दलित साहित्य अकादमी ने दलित समाज की सभी विधाओं में कार्य करने वाली प्रतिभाओं को अनुप्राणित किया है। दलित साहित्य अकादमी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि अपने दलित प्रतिभाओं को किसी एक सोच से बांधकर सीमित नहीं किया है, बल्कि समाजहित को सर्वोपरि माना है, समाज के लिये जिन विभूतियों ने कुछ किया है अथवा जो प्रतिभायें कुछ कर रही हैं, उन्हें प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सम्मानित कर प्रोत्साहित किया है।

दलित साहित्य अकादमी ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर को अपना आदर्श माना है साथ ही बाबू जगजीवन राम जी को भी सम्मान दिया है। दलित साहित्य अकादमी ने नेतृत्व संघर्ष को महत्व नहीं दिया, बल्कि जिन नेताओं ने दलित समाज के लिये कुछ किया है, उन्हें अपना आदर्श बनाया है। सन्तों की श्रेणी में कबीरदास, रैदास, मलूक दास, नानक आदि जिन संतों ने सामाजिक क्रांति का बिगुल बजाया, दलित साहित्य अकादमी ने उन्हें अपना सम्मान का प्रतीक बनाया है। ज्योतिराव फूले और साहू जी महाराज को भी दलित साहित्य अकादमी ने अपना आदर्श प्रतीक माना है। और अपने मंच से फूलनदेवी जैसी महिला को भी इसलिये सम्मानित किया है क्योंकि उससे दलित समाज को प्रतिशोध की प्रेरणा मिलती है। दलित साहित्य अकादमी ने दलित प्रतिभाओं को किसी एक व्यक्ति के विचारों व दर्शन की है चादर में लपेटकर किसी दड़बे में बंद नहीं किया, बल्कि सभी प्रतिभाओं को स्वतन्त्र सोच के लिये प्रेरित किया है।

शोध की यात्रा का अन्त नहीं होता। कोई भी शोध परिणाम अंतिम सत्य नहीं है। इसी प्रकार किसी भी नेता का कोई भी निर्णय समाज के लिये एकमात्र कल्याणकारी हो, ऐसा नहीं हो सकता। हम किसी एक व्यक्ति के गीत गाते रहें और उसकी प्रतिमा बनाकर कीर्तिन करते रहें, यह अन्धविश्वास है। हमें अपना रक्षक आप बनना चाहिये, परन्तु दलित समाज की प्रतिभायें अपने विवेक का प्रयोग नहीं कर रही हैं। अधिकांश प्रतिभायें डॉ. अम्बेडकर तक सीमित होकर रह गई हैं। दलित साहित्य अकादमी ने दलित प्रतिभाओं को ज्ञान के प्रकाश और विकास की बुलन्दियों को छूने के लिये स्वतंत्र रूप से प्रेरित किया हैं इस दिशा में डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। दलित समाज व उसकी प्रतिभायें उनकी आभारी रहेंगी।

माननीय डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर ने ज्यों–त्यों करके राष्ट्रीय स्तर पर विशाल सम्मेलन आयोजित किये और क्षेत्रिय दलित प्रतिभाओं को सम्मानित कर राष्ट्रीय स्तर पर ला खड़ा किया। उनके मंचों से दलित प्रतिभाओं ने स्वतंत्रता पूर्वक अपने विचार अभिव्यक्त किये और अपनी रचनाओं का प्रदर्शन किया। स्वतंत्रता अभिव्यक्ति और स्वतंत्र लेखनी की दिशा में दलित प्रतिभाओं को दलित साहित्य अमादमी ने सहारा देकर समाज का बहुत बड़ा उपकार किया है। स्वतंत्र विचार आज नहीं तो कल समाज के काम आयेंगे। •

(सुप्रसिद्ध दलित साहित्यकार श्री मेहर सिंह पूषण ने यह लेख सन् 2000 में लिखा था।)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ आज ही मंगायें

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

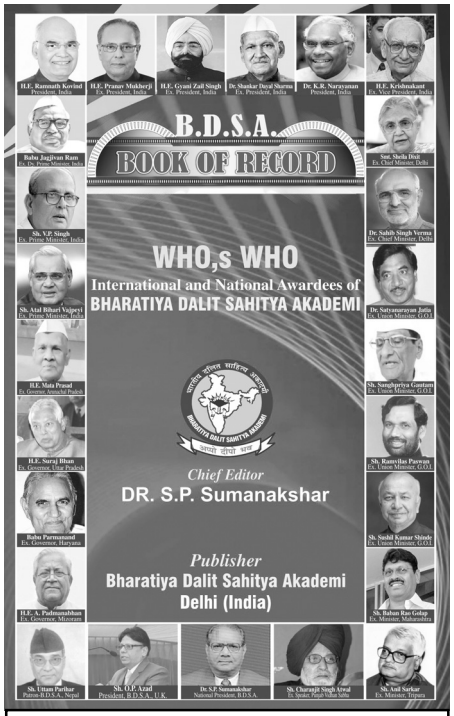

- **Total References of Personalities- about 2500**
- **Page : 300**
- **Price : Rs. 500/- Send by M.O./D.D.**

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारिों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली-110009
मो : 9891989175, 9810278936
jay.sumanakshar@gmail.com

बद्दुआओं का होता है...

बद्दुआओं का होता है कैसा,
असर देखिए।
किस कदर उजड़ा है,
मेरा घर देखिए।।
हौंसलों से पस्त हैं,
जमाने के लोग मगर,
लड़ रहा हूं जमाने से,
मेरा जिगर देखिए।।
सियासत ने बांट दिया,
इंसानों को कौमों में,
आतिश–ए–नफरत में,
जलता मेरा, शहर देखिए।।
तूफां में भी ढूंढ़ लेती हैं,
किनारे कश्तियां,
हौंसलों का मौजों से,
टकराने का हुनर देखिए।।
नस्लें हो रहीं बर्बाद,
नशे के कारोबार में,
नौजवानों की रगों में,
रेंगता कैसे, जहर देखिए।।
लहरों का उठता है,
सैलाब समुन्दर में,
हवाओं का पानी पे,
होता है कैसा, असर देखिए।।
हो रहा ताकत का बेजा,
इस्तेमाल लेकिन,
कायम है पर आवाम का,
सरकार में डर देखिये।।
जमुरियत में हाकिम भी,
आवाम चुनती है,
जालिम के खिलाफ वतन में,
चल रही, लहर देखिए।।
कर तो चुके हो बर्बाद,
गुलिस्तां मेरा लेकिन,
बाकी है मुझमें अब भी,
थोड़ी सी, कसर देखिये।।
अफवाह थी, कर देगा कलम,
सर कोई वजीर का,
छपी है आज लेकिन,
अखबार में, ये खबर देखिये।।
नाउम्मीदियों में भी,
उम्मीद का मुन्तजिर हूं,
झुक गया सजदे में आपके,
कैसे मेरा सिर देखिये।।
मायूसियों से भरी,
इस दुनिया में ए 'नाशाद'
हर शख्स गमजदा है,
जहां देखिये, जिधर देखिये।।
सता की जिद ने,
क्रूरता के नए, आयाम बना दिए,
शहादत में किसानों के,
कट गए कितने, सिर देखिये।।

–धर्मेंद्र कुमार रविकुल 'नाशाद'

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा कार्यालय : बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन, दिल्ली-110009 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936, 9891989175 **Email-sumanakshar@ymail.com, jay.sumanakshar@gmail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।
सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009